स्नातक हिन्दी (प्रतिष्ठा),द्वितीय सत्र

पत्र -3, (हिन्दी कथा साहित्य)

मैला आँचल : एक समीक्षा

फणीश्वरनाथ रेणु कृत 'मैला आँचल '(1954 ई.) काफी लोकप्रिय व सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना जाता है । यह एक आंचलिक उपन्यास है । ऐसे उपन्यास किसी विशेष क्षेत्र या अंचल के जन-जीवन व संस्कृति पर आधारित होते हैं । मैला आंचल की कथा भूमि के लिए 'मेरीगंज' गांव को चुना गया है जो बिहार राज्य के पूर्णिया जिला में स्थित है। उपन्यास में 1942 ईस्वी से लेकर गांधी जी के निधन तक की अर्थात स्वतंत्रता से पूर्व व उसके बाद की स्थितियों-परिस्थितियों को रेखांकित किया गया है ।

मैला आंचल में 'मेरीगंज' गांव की कथा है । इस पिछड़े हुए गांव में जीवन लगभग ठहरा हुआ सा है , लेकिन जैसे ही प्रशांत यहां आकर मलेरिया अनुसंधान केंद्र खोलता है, वैसे ही यहां का ठहरा जीवन चल पड़ता है । इस उपन्यास को उभारने में रचनाकार ने व्यैक्तिक चारित्रिक वैशिष्ट्य को उभारने में जितनी शक्ति खर्च की है उतनी उसकी वर्गगत वैशिष्ट्य को उभारने में नहीं । प्रेमचंद की तरह रेणु के यहां जो व्यक्ति है वह वर्ग होगा ही यह भ्रम टूट जाता है । मेरीगंज गांव टोलों में बँटा है। और सभी जाति अपने अपने टोले में रहते हैं , जैसे- बभन टोली, राजपूत टोली,गुअर टोली, आदि । सभी टोले अपने जातिगत वैशिष्ट्य को बनाते हुए मेरीगंज के सामूहिक अस्तित्व का हिस्सा हैं । इस उपन्यास में रेणु ने प्रारंभ में ही गांधी का श्राद्ध दिखाया है । गांधी जी का श्राद्ध दिखाकर रेणु ने बताना चाहा कि आज के समाज में हक की मांग के लिए गांधीवादी दर्शन टूटे हुए हथियार की तरह है । अब इस अहिंसावादी सत्याग्रह से हक मांगना निरर्थक है । यहां रेणु जी की तलाश एक ऐसे दर्शन की है जो गांधीवाद और मार्क्सवाद के बीच का हो । हमारे यहां लोगों की यह असमर्थता उन्हें किसी बदलाव को अंजाम देने से बाधित करती है । जयप्रकाश नारायण 1974 में पटना के गांधी मैदान में भाषण देने के क्रम में छात्रों का आह्वान करते हुए कहते हैं कि बदलाव हथियारों और औजारों के बिना संभव नहीं, फिर भी वे गांधीवादी विचारधारा पर लड़ाई को रफ्तार देते रहे । इससे यह संकेत मिलता है कि आजादी के बाद गांधीवादी आस्थाएँ सिर धुनती हुई दिखाई पड़ेंगी । बालचंद और वामन दास अपनी गांधीवादी मूल्यों के कारण सामाजिक व राष्ट्रीय समस्याओं हेतु रचनात्मक उपयोग के बावजूद उपेक्षित व तिरस्कृत होते हैं । इतना ही नहीं वामन दास को अपने गांधीवादी आस्था के लिए अपनी शहादत भी देनी पड़ती है । यह एक अजीब बात है कि रचनाकार गांधीवाद से अलग होने का संकेत देते हुए भी गांव की समस्या तथा भूमि का निदान अंततः गांधीवादी हृदय परिवर्तन में ही ढूंढता है । प्रशांत की प्रेरणा से तहसीलदार विश्वनाथ प्रताप अपनी सारी जमीन भूमिहीनों और काश्तकारों को लौटा देता है।

' मैला आंचल' का महत्व इस बात के लिए नहीं है कि इसमें ग्रामीण जीवन का चित्रण हुआ है और ग्रामीण समस्याओं का राजनीतिक समाधान ढूंढा गया है । बल्कि इसलिए है कि रचनाकार ने गांव के सभी चरित्रों को आत्मीयता और स्नेह से रचा है । ये हमारे ही समाज के जीते जागते चरित्र हैं । ये अलग बात है कि पूरे अंचल को उसकी इयत्ता में निरूपित करने के कारण कोई क्लासिक चित्र नहीं उभरा है । 'मैला आंचल' में अंचल ही नायक है । सारी कथाएं मिलकर पूर्णिया अंचल को समग्रता में व्यक्त करती है । पूर्णिया अंचल का पूरा भौगोलिक स्वरूप और उसकी सांस्कृतिक विशिष्टता पाठक के समक्ष उपस्थित होती है ।

'मैला आंचल ' का शिल्प अपनी तरह का है । यहां कथा केंद्र से परिधि की ओर फैलती है । कई कथाओं के माध्यम से लेखक ने पूरे अंचल को समग्रता में व्यक्त किया है । अंचल को समग्रता में व्यक्त करने के कारण ही यह

आंचलिक उपन्यास की दृष्टि से खरा उतरता है । रेणु ने स्वयं इसे आंचलिक उपन्यास कहा है - "यह है मैला आंचल, एक आंचलिक उपन्यास ।... इसमें फूल भी हैं शूल भी ; धूल भी है, गुलाब भी; कीचड़ भी है, चंदन भी; सुंदरता भी है , कुरूपता भी - मैं किसी से दामन बचाकर निकल नहीं पाया ।" मैला आंचल को उभारने वाले सबसे प्रमुख तत्व हैं , इसकी भाषा । आंचलिक उपन्यास की यह विशेषता है कि इसमें आंचलिक भाषा का प्रयोग पात्र और लेखक दोनों द्वारा किया जाए ,और इस तरह यह प्रयोग हो कि पाठक को तादात्म्य स्थापित करने में कठिनाई भी ना हो । रेणु ने स्थानीय बोलियों का साहित्यिक भाषा के साथ अद्भुत मिश्रण किया है । गांव की मुहावरेदार भाषा को रेणु ने पकड़ा है , जैसे - 'बाप का नाम दुर्गादास बेटा काटे घोड़ाघास ।' किसी खास ग्रामीण इलाकों में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का प्रयोग भी रेणु करते हैं ,जैसे -'रोटिया गवाह' यह शब्द बिल्कुल आंचलिक शब्द है जो किसी अन्य अंचल में प्रयुक्त नहीं होता ।वे ग्रामीण शब्दों का उसी उच्चारण में बात करवाते हैं ,जैसे -टेशन ,रायबरेली आदि। रेणु जब पात्रों का वर्णन करते हैं तो उसी तरह की भाषा का प्रयोग स्वयं भी करते हैं । उदाहरण के लिए डॉक्टर प्रशांत के बारे में बताते समय साहित्यिक और परिनिष्ठित भाषा का प्रयोग करते हैं वहीं किसी ग्रामीण पात्र के बारे में बताते समय ग्रामीण भाषा का । जनता के बोलने के ढंग में सोचने का ढंग भी समाहित होता है । रेणु ने इसे पकड़ा है, जैसे - कर कचहरी में मर मुकदमा लड़ने आते हैं । जहां लोग नहीं बोलते हैं वहां रेणु लोगों की संवेदना को पकड़ते हैं ,जैसे - पंचायत में फुलिया की भाषा ।वे हर पात्र के बोलने की विशिष्टता को भी पकड़ते हैं । हर व्यक्ति का अपना एक खास टोन होता है , इसे उन्होंने पकड़ा है। लोक कथा , लोक संगीत, लोक नृत्य आदि के माध्यम से कथा को बढ़ाते हैं जो कि आंचलिकता का मूल तत्व है । 'मैला आँचल' के चित्रण की अपनी विशेषता है । चित्रण के दौरान यह पता ही नहीं चलता है कि किसकी दृष्टि से चित्रण हो रहा है- पात्र या लेखक । यहाँ चित्रण में एक तीव्रता है । संवादों के दौरान यह पता ही नहीं चलता कि कौन पात्र बोल रहा है, किंतु पाठक को यह अखरता नहीं है । रेणु की तीव्रता में पाठक सानंद बाहा चला जाता है । नेमीचंद्र जैन इसी कारण रेणु की दृष्टि को 'कवित्वपूर्ण दृष्टि' कहते हैं । संगीतात्मकता , सरसता के साथ-साथ एक तीव्र वेदना 'मैलाआंचल' में है ।

आवश्यक निर्देश- विद्यार्थीगण को निर्देशित किया जाता है कि पाठ्य पुस्तक में दिए गए अंश का ध्यान पूर्वक अध्ययन करें और प्रस्तुत अभ्यास के प्रश्नों का तर्क आधारित उत्तर देने का प्रयास करें । विद्यार्थियों / परीक्षार्थियों के मार्गदर्शन हेतु यह 'ई- कंटेंट' संक्षिप्त रूप में तैयार किया गया है ।

नालन्दा मुक्त विश्वविद्यालय

समन्वयक हिन्दी

डॉ. बद्रीनारायण सिंह